ई-बुक
PDF

UGC NET/JRF · UP TGT/PGT · RPSC
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर परीक्षाओं हेतु

हिंदी साहित्य चैनल
store.hindisahity.com

हिंदी साहित्य

प्रसिद्ध पंक्तियाँ और महत्वपूर्ण कथन

पूर्वपीठिका · **आदिकाल** · **भक्तिकाल**
रीतिकाल · **आधुनिक काल**
कालवार · कवि-वार · आलोचक-वार
+ पंक्ति-सूची, आलोचक-वार कथन-सूची

शुक्ल
द्विवेदी
नगेंद्र
के कथन विशेष

मूल्य केवल ₹99

मॉक टेस्ट
उत्तर सहित

कालवार
अभ्यास प्रश्न
उत्तर-संकेत सहित

+

मॉडल टेस्ट
(मॉक) प्रश्न-पत्र
उत्तर सहित



केवल कृष्ण घोड़ेला
एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी) · सहायक आचार्य

store.hindisahity.com



लेखक परिचय

केवल कृष्ण घोड़ेला

एम.ए., बी.एड. (नेट हिंदी) · सहायक आचार्य (हिंदी) · श्रीगंगानगर (राजस्थान)

हिंदी साहित्य चैनल के संचालक। UGC NET/JRF, SET, TGT, PGT, RPSC आदि परीक्षाओं के लिए वर्षों से हिंदी पढ़ा रहे हैं।

hindisahity.com store.hindisahity.com

YouTube : Hindi Sahitya Channel Telegram

© सर्वाधिकार सुरक्षित (All Rights Reserved)

लेखक एवं संकलनकर्ता : केवल कृष्ण घोड़ेला प्रस्तुति एवं प्रकाशन : हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर

यह पुस्तक केवल कृष्ण घोड़ेला द्वारा तैयार की गई है और हिंदी साहित्य चैनल (store.hindisahity.com) द्वारा प्रकाशित है। इसकी विषय-वस्तु, प्रस्तुति, तालिकाएँ, बॉक्स और प्रश्न लेखक की बौद्धिक संपदा हैं, जो प्रतिलिप्यधिकार अधिनियम, 1957 के अंतर्गत सुरक्षित हैं।

यह PDF केवल ख़रीदार के व्यक्तिगत अध्ययन के लिए है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसे या इसके किसी अंश को कॉपी, प्रिंट या फ़ोटोकॉपी करके बेचना या बाँटना; WhatsApp, Telegram, Facebook आदि किसी ग्रुप या चैनल में साझा करना; किसी वेबसाइट, ऐप, YouTube वीडियो या कोचिंग सामग्री में उपयोग करना **पूर्णतः वर्जित है**। ऐसा करने पर कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

अस्वीकरण : पुस्तक तैयार करने में पूरी सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए लेखक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। परीक्षा से जुड़ी आधिकारिक जानकारी के लिए संबंधित आयोग की अधिसूचना देखें। कोई त्रुटि मिले तो WhatsApp 9680260474 पर बताएँ, अगले संस्करण में सुधार किया जाएगा।

इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें

- हर काल चार भागों में है — क: प्रसिद्ध पंक्तियाँ (धारा और कवि के क्रम से), ख: महत्वपूर्ण कथन (विषय-वार), ग: मत, उपाधियाँ और प्रमुख रचनाकार, घ: अभ्यास प्रश्न।
- पीले बॉक्स में पंक्ति है, नीचे कवि, रचना और संकेत; नीले बॉक्स में कथन है, नीचे कथनकर्ता, संदर्भ और ग्रंथ।
- "परीक्षा-उपयोगी" चिह्न उन पंक्तियों/कथनों पर है जो परीक्षाओं में बार-बार पूछे गए हैं।
- हर अभ्यास-प्रश्न के "उत्तर और संकेत" में मूल पंक्ति/कथन का क्रमांक दिया है, ताकि तुरंत वहीं देख सकें।
- सूचकांक में किसी भी खंड या परिशिष्ट पर क्लिक करके सीधे उस पृष्ठ पर पहुँचिए।

इस पुस्तक में क्या-क्या है

- खंड 1 : पूर्वपीठिका — साहित्येतिहास लेखन, काल-विभाजन और नामकरण संबंधी कथन व तालिकाएँ
- खंड 2–5 : आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल — 366 प्रसिद्ध पंक्तियाँ और 186 महत्वपूर्ण कथन
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र आदि के कथनों पर विशेष ध्यान
- हर काल में विद्वानों के मत, उपाधियाँ, प्रमुख रचनाकार-तालिका और अभ्यास प्रश्न (उत्तर-संकेत सहित)
- परिशिष्ट : पंक्ति-सूची, आलोचक-वार कथन-सूची और 120 प्रश्नों का मॉडल टेस्ट (उत्तर सहित)

आपकी परीक्षा के अनुसार कस्टम नोट्स — ऑर्डर पर तैयार

हमारी टीम CTET, REET, RPSC, TGT, PGT, NET/JRF सहित किसी भी परीक्षा के लिए आपके पाठ्यक्रम के अनुसार विशेष नोट्स ऑर्डर पर तैयार करती है (सशुल्क सेवा)।

WhatsApp : 9680260474

सूचकांक (विषय-सूची)

खंड 1 : पूर्वपीठिका 4

खंड 2 : आदिकाल 7

भाग क: प्रसिद्ध पंक्तियाँ · भाग ख: महत्वपूर्ण कथन · भाग ग: मत, उपाधियाँ, प्रमुख रचनाकार · भाग घ: अभ्यास प्रश्न (उत्तर-संकेत सहित)

खंड 3 : भक्तिकाल 25

भाग क: प्रसिद्ध पंक्तियाँ · भाग ख: महत्वपूर्ण कथन · भाग ग: मत, उपाधियाँ, प्रमुख रचनाकार · भाग घ: अभ्यास प्रश्न (उत्तर-संकेत सहित)

खंड 4 : रीतिकाल 42

भाग क: प्रसिद्ध पंक्तियाँ · भाग ख: महत्वपूर्ण कथन · भाग ग: मत, उपाधियाँ, प्रमुख रचनाकार · भाग घ: अभ्यास प्रश्न (उत्तर-संकेत सहित)

खंड 5 : आधुनिक काल 52

भाग क: प्रसिद्ध पंक्तियाँ · भाग ख: महत्वपूर्ण कथन · भाग ग: मत, उपाधियाँ, प्रमुख रचनाकार · भाग घ: अभ्यास प्रश्न (उत्तर-संकेत सहित)

परिशिष्ट 1 : पंक्ति-सूची 70

परिशिष्ट 2 : आलोचक-वार सूची 83

परिशिष्ट 3 : मॉडल टेस्ट 95

हिंदी साहित्य चैनल

खंड 1 : पूर्वपीठिका — साहित्येतिहास लेखन, काल-विभाजन और नामकरण

हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन, काल-विभाजन और नामकरण से जुड़े वे कथन जो *UGC NET, TGT, PGT, RPSC* और असिस्टेंट प्रोफ़ेसर परीक्षाओं में बार-बार पूछे गए हैं।

महत्वपूर्ण कथन

ख-1 साहित्य और साहित्येतिहास की परिभाषा

1. "जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।"

कथनकर्ता: **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** | **संदर्भ:** साहित्य का स्वरूप और इतिहास-दृष्टि | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास (काल-विभाग) • **परीक्षा-उपयोगी**

2. "आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।"

कथनकर्ता: **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** | **संदर्भ:** साहित्य के इतिहास की परिभाषा | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास

3. "युग चेतना और साहित्य चेतना के समन्वय पर आधृत साहित्य के इतिहास के संश्लिष्ट स्वरूप को ही हम स्वीकार करना चाहिए।"

कथनकर्ता: **डॉ. नगेंद्र** | **संदर्भ:** साहित्येतिहास की पद्धति | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास (संपादित)

4. "युग का विभाजन ऐतिहासिक ज्ञान के प्रमुख साधनों में से एक है और उसके बिना काम नहीं चल सकता है।"

कथनकर्ता: **नलिन विलोचन शर्मा** | **संदर्भ:** काल-विभाजन की आवश्यकता | **ग्रंथ:** साहित्य का इतिहास-दर्शन

5. "प्रत्येक युग अपनी साहित्यिक ऐतिहासिक स्थिति की अनुभूत आवश्यकता के अनुसार अपना साहित्य निर्माण करता है।"

कथनकर्ता: **गजानन माधव मुक्तिबोध** | **संदर्भ:** युग और साहित्य

ख-2 काल-विभाजन और नामकरण पर

6. "काल-प्रवृत्ति का निर्णय प्राप्त ग्रंथों की संख्या द्वारा नहीं, बल्कि उस काल की मुख्य प्रेरणादायक वस्तु के आधार पर ही हो सकता है।"

कथनकर्ता: **हजारीप्रसाद द्विवेदी** | **संदर्भ:** शुक्ल जी के नामकरण-आधार (ग्रंथों की प्रसिद्धि/संख्या) की आलोचना | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का आदिकाल *(भावार्थ रूप में भी पूछा जाता है।)*

7. "वस्तुतः हिंदी साहित्य का आदिकाल शब्द एक प्रकार की भ्रामक धारणा की सृष्टि करता है और श्रोता के चित्त में यह भाव पैदा करता है कि यह काल कोई आदिम मनोभावापन्न, परंपरा-विनिर्मुक्त, काव्य-रूढ़ियों से अछूते साहित्य का काल है। यह ठीक नहीं है। यह काल बहुत अधिक परंपरा-प्रेमी, रूढ़िग्रस्त और सजग-सचेत कवियों का काल है।"

कथनकर्ता: **हजारीप्रसाद द्विवेदी** | **संदर्भ:** 'आदिकाल' नाम | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का आदिकाल • **परीक्षा-उपयोगी**

8. "विक्रम की सातवीं शताब्दी से ग्यारहवीं तक अपभ्रंश की प्रधानता रही और फिर वह पुरानी हिंदी में परिणत हो गई।"

कथनकर्ता: **चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'** | **संदर्भ:** अपभ्रंश और पुरानी हिंदी | **ग्रंथ:** पुरानी हिंदी (नागरी प्रचारिणी पत्रिका) • **परीक्षा-उपयोगी**

9. "अपभ्रंश के कवियों को विस्मरण करना हमारे लिए हानि की वस्तु है। यही कवि हिंदी-काव्य-धारा के प्रथम स्रष्टा थे।"

कथनकर्ता: **राहुल सांकृत्यायन** | **संदर्भ:** अपभ्रंश कवि और हिंदी | **ग्रंथ:** हिंदी काव्यधारा • **परीक्षा-उपयोगी**

10. "सिद्ध-सामंत युग की कविताओं की सृष्टि आकाश में नहीं हुई। वे हमारे देश की ठोस धरती की उपज हैं।"

कथनकर्ता: **राहुल सांकृत्यायन** | **संदर्भ:** आदिकाल ('सिद्ध-सामंत युग') | **ग्रंथ:** हिंदी काव्यधारा

खंड 2 : आदिकाल (वि.सं. 1050 – 1375) — प्रसिद्ध पंक्तियाँ और महत्वपूर्ण कथन

आदिकाल की धाराएँ: सिद्ध, नाथ, जैन (अपभ्रंश), रासो (वीरगाथा) और लौकिक साहित्य (खुसरो, विद्यापति, ढोला मारू रा दूहा)। प्राचीन पंक्तियाँ मूल पाठ में दी गई हैं; पाठ-भेद संभव है।

भाग क : प्रसिद्ध पंक्तियाँ

क-1 सिद्ध साहित्य

1. पंडिअ सअल सत्त वक्खाणइ। देहहि बुद्ध बसंत न जाणइ।
अमणागमण ण तेन विखंडिअ। तोवि णिलज्ज भणइ हउँ पंडिअ॥

कवि: सरहपा | **रचना:** दोहाकोश • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: शरीर में बसे बुद्ध को नहीं जानता, आवागमन भी नहीं मिटाया, फिर भी निर्लज्ज स्वयं को पंडित कहता है — पंडितों पर व्यंग्य।

2. जहि मन पवन न संचरइ, रवि ससि नाहि पवेस।
तहि बट चित्त बिसाम करु, सरहे कहिअ उवेस॥

कवि: सरहपा | **रचना:** दोहाकोश • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: जहाँ मन-पवन और सूर्य-चंद्र का प्रवेश नहीं, वहीं चित्त को विश्राम दो — सहज साधना।

3. घोर अँधारे चंदमणि जिमि उज्जोअ करेइ।
परम महासुह एखु कणे दुरिअ अशेष हरेइ॥

कवि: सरहपा | **रचना:** दोहाकोश
संकेत: 'महासुख' का एक क्षण समस्त पाप हर लेता है।

4. नाद न बिंदु न रवि न शशि मंडल। चिअराअ सहावे मूकल।
उजु रे उजु छाडि मा लेहु रे बंक। निअहि बोहि मा जाहु रे लंक॥

कवि: सरहपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: सीधा (ऋजु) मार्ग अपनाओ, टेढ़ा (वाम) नहीं; बोधि अपने भीतर है।

5. काआ तरुवर पंच बिडाल। चंचल चीए पइठो काल।
दिट करिअ महासुह परिमाण। लूइ भणइ गुरु पुच्छिअ जाण॥

कवि: लूइपा (लूहिपा) | **रचना:** चर्यापद • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: काया वृक्ष, पाँच डालें (पंच बिडाल = आलस्य, हिंसा, काम, विचिकित्सा, मोह)।

6. भाव न होइ, अभाव ण जाइ। अइस संबोहे को पतिआइ?

कवि: लूइपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: भाव-अभाव से परे तत्व।

7. सहजे थिर करि वारुणी साध। जे अजरामर होइ दिट काँध॥

कवि: विरूपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: सहज साधना से अजर-अमर होना।

8. एक ण किज्जइ मंत्र ण तंत। णिअ घरणी लइ केलि करंत॥

कवि: कण्हपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: मंत्र-तंत्र छोड़ सहज जीवन।

9. नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छइ। छोइ जाइ सो बाह्म नाड़िया॥
आलो डोंबि! तोए सम करिब म साँग। निघिण कण्ह कपाली जोइ लाग॥

कवि: कण्हपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: 'डोंबी' = शुद्ध अवधूती वृत्ति का प्रतीक।

10. गंगा जउँना माझे रे बहइ नाई।

कवि: कण्हपा | **रचना:** चर्यापद • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: गंगा-यमुना (इड़ा-पिंगला) के बीच नाव (सुषुम्ना) — सांकेतिक 'संध्या भाषा'।

11. ससुरी निंद गेल, बहुड़ी जागअ। कानेट चोर निलका गइ मागअ॥

कवि: कुक्कुरिपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: उलटबाँसी शैली।

12. बेंग संसार बाड़हिल जाअ। दुहिल दूध कि बेंटे समाअ॥
बलद बिआएल गविआ बाँझे। पिटा दुहिए एतिना साँझे॥

कवि: ढेंढणपा | **रचना:** चर्यापद
संकेत: अटपटी बानी (उलटबाँसी); बैल ब्याया, गाय बाँझ — आगे कबीर की उलटबाँसियों में यही शैली।

13. आगम वेअ पुराणे पंडित माण वहंति।
पक्क सिरिफल अलिअ जिम बाहेरित भमंति॥

कवि: कण्हपा | **रचना:** दोहाकोश • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: आगम, वेद, पुराण पढ़कर पंडित अभिमान करते हैं, पर पके श्रीफल के बाहर घूमते भौंरे की तरह तत्व तक नहीं पहुँचते।

याद रखें: सिद्धों की संख्या 84; सबसे पुराने सरहपा (शुक्ल: वि.सं. 690; राहुल: 769 ई.); सिद्धों की भाषा "संध्या भाषा"; पंच बिडाल = आलस्य, हिंसा, काम, विचिकित्सा, मोह।

क-2 नाथ साहित्य

14. हसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान। अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान॥

कवि: गोरखनाथ | **रचना:** सबदी (गोरखबानी) • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: हँसते-खेलते ध्यान और दिन-रात ब्रह्मज्ञान की चर्चा।

15. स्वामी तुम्हइ गुर गोसाई। अम्हे जो सिव सबद एक बूझिबा॥
निरारंबे चेला कूण विधि रहै। सतगुरु होइ स पुछ्या कहै॥

कवि: गोरखनाथ | **रचना:** गोरखबानी (पद)
संकेत: गुरु-शिष्य संवाद; गुरु-महिमा।

16. अवधू रहिया हाटे बाटे रूप बिरष की छाया।
तजिबा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया॥

कवि: गोरखनाथ | **रचना:** गोरखबानी
संकेत: अवधूत का आचरण — काम, क्रोध, लोभ, मोह का त्याग।

17. नौ लख पातरि आगे नाचै, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा॥

कवि: गोरखनाथ | **रचना:** गोरखबानी
संकेत: इंद्रिय-निग्रह और अंतःसाधना।

18. गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।

कवि: तुलसीदास | **रचना:** कवितावली • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: नाथपंथी योग पर तुलसी का प्रसिद्ध व्यंग्य — नाथ साहित्य के प्रसंग में बार-बार पूछा जाता है।

खंड 3 : भक्तिकाल (वि.सं. 1375 – 1700) — प्रसिद्ध पंक्तियाँ और महत्वपूर्ण कथन

भक्तिकाल की चार धाराएँ: निर्गुण — *(क)* ज्ञानाश्रयी संत काव्य, *(ख)* प्रेमाश्रयी सूफ़ी काव्य; सगुण — *(ग)* रामभक्ति काव्य, *(घ)* कृष्णभक्ति काव्य। ग्रियर्सन ने इसे हिंदी साहित्य का 'स्वर्णयुग' कहा।

भाग क : प्रसिद्ध पंक्तियाँ

क-1 संत (ज्ञानाश्रयी) काव्य: कबीर

87. भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानंद।
परगट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड॥

कवि: प्रचलित (कबीर-परंपरा) • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: भक्ति का दक्षिण से उत्तर आना — रामानंद लाए, कबीर ने फैलाया।

88. जाति-पाँति पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई॥

कवि: रामानंद (परंपरा से प्रसिद्ध) • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: रामानंद का समतावादी उद्घोष।

89. मसि कागद छूयो नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ।

कवि: कबीर | **रचना:** साखी • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे — 'बानी' मौखिक; संकलन 'बीजक' (साखी, सबद, रमैनी)।

90. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: प्रेम ही सच्चा ज्ञान।

91. पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते यह चाकी भली, पीस खाय संसार॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: मूर्तिपूजा पर व्यंग्य।

92. काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: बाह्याडंबर पर प्रहार — हिंदू-मुसलमान दोनों।

93. कबिरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ।
जो घर जारै आपना, चलै हमारे साथ॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी
संकेत: मोह-माया का घर जलाने वाला ही साथी।

94. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहिं।
ऐसैं घटि घटि राम हैं, दुनियाँ देखै नाहिं॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी
संकेत: ईश्वर घट-घट में।

95. सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी
संकेत: विरही साधक की जागृति।

96. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी
संकेत: जाति नहीं, ज्ञान।

97. जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहि समाना, यह तथ कह्यौ गियानी॥

कवि: कबीर | **रचना:** सबद • परीक्षा-उपयोगी
संकेत: अद्वैत — आत्मा-परमात्मा का एकत्व।

98. माया महाठगिनी हम जानी।

कवि: कबीर | **रचना:** सबद • परीक्षा-उपयोगी
संकेत: माया का रूपक।

99. दुलहिनी गावहु मंगलचार।
हम घरि आए हो राजा राम भरतार॥

कवि: कबीर | **रचना:** सबद • परीक्षा-उपयोगी
संकेत: दांपत्य-प्रतीक में रहस्यवाद।

100. संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ानी, माया रहै न बाँधी॥

कवि: कबीर | **रचना:** सबद • परीक्षा-उपयोगी
संकेत: सांगरूपक।

101. काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी।
तेरे ही नालि सरोवर पानी॥

कवि: कबीर | **रचना:** सबद
संकेत: आत्मा (नलिनी) परमात्मा (जल) के बीच रहकर भी मुरझाई — शांत रस।

102. हम न मरैं मरिहैं संसारा। हमको मिला जियावनहारा॥

कवि: कबीर | **रचना:** सबद
संकेत: अमरत्व-बोध।

103. मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।

कवि: कबीर | **रचना:** सबद

104. बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये। भाग बड़े घर बैठे आये॥

कवि: कबीर | **रचना:** सबद
संकेत: मिलन का उल्लास।

105. लाली मेरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल॥

कवि: कबीर | **रचना:** साखी
संकेत: रहस्यवाद — ब्रह्म में लीन होना।

93. "निर्गुण मार्ग के निर्दिष्ट प्रवर्तक कबीरदास ही थे।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** कबीर | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • परीक्षा-उपयोगी

94. "सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचंड, दिल के साफ़, दिमाग के दुरुस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर..."
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** कबीर का व्यक्तित्व | **ग्रंथ:** कबीर • परीक्षा-उपयोगी

ख-3 जायसी और सूफ़ी काव्य

95. "जायसी बड़े भावुक भगवद्भक्त थे और अपने समय में बड़े ही सिद्ध और पहुँचे हुए फ़कीर माने जाते थे।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** जायसी | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास

96. "जायसी के शृंगार में मानसिक पक्ष प्रधान है, शारीरिक गौण है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** जायसी का शृंगार | **ग्रंथ:** जायसी ग्रंथावली (भूमिका) • परीक्षा-उपयोगी

97. "नागमती का विरह-वर्णन हिंदी साहित्य में एक अद्वितीय वस्तु है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** पद्मावत का नागमती वियोग खंड | **ग्रंथ:** जायसी ग्रंथावली (भूमिका) • परीक्षा-उपयोगी

98. "यह सूचित करने की आवश्यकता नहीं है कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रजभाषा पर।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** सूर और जायसी की भाषा | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • परीक्षा-उपयोगी

99. "यह आशिक-माशूकों का निर्लज्ज प्रलाप नहीं है; यह हिंदू गृहिणी की विरह-वाणी है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** नागमती का विरह-वर्णन (पद्मावत) | **ग्रंथ:** जायसी ग्रंथावली (भूमिका) *(भावार्थ-सहित)*

100. "पद्मावत हिंदी में अपने ढंग की अकेली ट्रैजिक कृति है।"
कथनकर्ता: विजयदेवनारायण साही | **संदर्भ:** पद्मावत | **ग्रंथ:** जायसी • परीक्षा-उपयोगी

ख-4 तुलसीदास

101. "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य की भूमिका • परीक्षा-उपयोगी

102. "उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य की भूमिका • परीक्षा-उपयोगी

103. "प्रेम और शृंगार का ऐसा वर्णन जो बिना किसी लज्जा और संकोच के सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • परीक्षा-उपयोगी

104. "यह एक कवि ही हिंदी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • परीक्षा-उपयोगी

105. "तुलसीदास उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय-मंदिर में पूर्ण प्रेम-प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • परीक्षा-उपयोगी

106. "तुलसीदास बुद्धदेव के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक थे।"
कथनकर्ता: जॉर्ज ग्रियर्सन | **संदर्भ:** तुलसीदास • परीक्षा-उपयोगी

107. "तुलसीदास अपने युग के सबसे महान व्यक्ति थे — अकबर से भी महान।"
कथनकर्ता: विंसेंट ए. स्मिथ | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** अकबर: द ग्रेट मुगल (भावार्थ)

108. "तुलसीदास को जो अभूतपूर्व सफलता मिली, उसका कारण यह था कि वे समन्वय की विशाल बुद्धि लेकर उत्पन्न हुए थे।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** तुलसीदास | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य की भूमिका • परीक्षा-उपयोगी

109. "गोस्वामी जी के प्रादुर्भाव को हिंदी काव्य-क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: तुलसीदास **| ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास

ख-5 सूरदास और कृष्णभक्ति

110. "वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्र का जितना अधिक उद्‌घाटन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का कोना-कोना वे झाँक आए।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: सूरदास **| ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

111. "सूरसागर किसी चली आती हुई गीतकाव्य-परंपरा का—चाहे वह मौखिक ही रही हो—पूर्ण विकास-सा प्रतीत होता है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: सूरसागर **| ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

112. "भ्रमरगीत सूरसागर के भीतर का एक सार तत्व है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: भ्रमरगीत **| ग्रंथ:** भ्रमरगीत सार (भूमिका) • **परीक्षा-उपयोगी**

113. "सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | संदर्भ: सूरदास **| ग्रंथ:** सूर साहित्य • **परीक्षा-उपयोगी**

114. "तुलसी के वचनों के समान रहीम के वचन भी हिंदीभाषी भूभाग में सर्वसाधारण के मुँह पर रहते हैं।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: रहीम **| ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

115. "प्रेम के ऐसे सुंदर उद्गार इनके सवैयों से निकले कि जनसाधारण प्रेम या शृंगार संबंधी कवित्त-सवैयों को ही 'रसखान' कहने लगे।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: रसखान **| ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

116. "आचार्यों की छाप लगी हुई आठ वीणाएँ कृष्ण की प्रेमलीला का कीर्तन करने उठीं, जिनमें सबसे ऊँची, सुरीली और मधुर झनकार अंधे कवि सूरदास की वीणा की थी।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: सूरदास और अष्टछाप **| ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

117. "सूर में जितनी सहृदयता और भावुकता है, प्रायः उतनी ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | संदर्भ: सूरदास **| ग्रंथ:** भ्रमरगीत सार (भूमिका)

भाग ग : प्रमुख मत और उपाधियाँ

विद्वानों के प्रमुख मत (भावार्थ)

विद्वान	मत
जॉर्ज ग्रियर्सन	भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का 'स्वर्णयुग' कहा; भक्ति आंदोलन को ईसाइयत की देन माना; तुलसी को 'बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक' कहा।
आचार्य शुक्ल	भक्ति आंदोलन को मुस्लिम आक्रमण से 'हताश जाति' की प्रतिक्रिया माना; कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' कहा; तुलसी को 'लोकमंगल की साधना का कवि' माना।
हजारीप्रसाद द्विवेदी	भक्ति साहित्य को भारतीय चिंताधारा का स्वाभाविक विकास माना; कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' और 'मस्तमौला' कहा।
डॉ. रामविलास शर्मा	भक्ति आंदोलन को 'लोक जागरण' कहा।
श्यामसुंदर दास	कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा।
विट्ठलनाथ	सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा; 1565 ई. में अष्टछाप की स्थापना की।
नाभादास	तुलसी को 'कलिकाल का वाल्मीकि' कहा ('भक्तमाल')।
विंसेंट स्मिथ	तुलसीदास को 'मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति' कहा।

विद्वान	मत

उपाधियाँ और उपनाम

उपाधि / उपनाम	कवि / लेखक
वाणी का डिक्टेटर, मस्तमौला	कबीर (हजारीप्रसाद द्विवेदी)
वात्सल्य रस सम्राट, पुष्टिमार्ग का जहाज	सूरदास
लोकनायक, कलिकाल का वाल्मीकि, समन्वय का कवि	तुलसीदास
जड़िया	नंददास
राजस्थान की राधा	मीराबाई
अष्टछाप के सबसे ज्येष्ठ / सबसे कनिष्ठ कवि	कुंभनदास / नंददास

प्रमुख रचनाकार: एक नज़र में

रचनाकार	प्रमुख रचनाएँ	विशेष
रामानंद	—	रामानंदी संप्रदाय; 'जाति-पाँति पूछै नहिं कोई'; कबीर के गुरु
कबीर	बीजक (साखी, सबद, रमैनी)	निर्गुण संत; 'वाणी के डिक्टेटर' (द्विवेदी); भाषा: सधुक्कड़ी/पंचमेल खिचड़ी
रैदास (रविदास)	पद (गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित)	'मन चंगा तो कठौती में गंगा'
गुरु नानक	जपुजी, आसा दी वार	सिख धर्म के प्रवर्तक
दादूदयाल	दादू की बानी	ब्रह्म संप्रदाय (दादूपंथ); 'राजस्थान के कबीर'
सुंदरदास	सुंदर विलास, ज्ञान समुद्र	संतों में सबसे शिक्षित; दादू के शिष्य
मलूकदास	ज्ञानबोध, रत्नखान	'अजगर करै न चाकरी'
मलिक मुहम्मद जायसी	पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कन्हावत	प्रेमाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि; अवधी; मसनवी शैली
कुतुबन / मंझन / उसमान	मृगावती / मधुमालती / चित्रावली	सूफ़ी प्रेमाख्यान
तुलसीदास	रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली	'लोकनायक' (द्विवेदी); समन्वय के कवि; अवधी व ब्रज दोनों
अग्रदास / नाभादास	कुंडलिया / भक्तमाल	रसिक संप्रदाय; भक्तमाल में 200 भक्तों का परिचय
सूरदास	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी	वल्लभाचार्य के शिष्य; अष्टछाप के 'जहाज'; 'वात्सल्य रस के सम्राट'
नंददास	रासपंचाध्यायी, भँवरगीत	'और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया'; अष्टछाप
कुंभनदास	पद	'संतन को कहा सीकरी सों काम'; अष्टछाप
मीराबाई	पदावली, नरसी जी का मायरा	कृष्ण की माधुर्यभाव की उपासिका; 'राजस्थान

11. (c) मलूकदास — पंक्ति 115: मलूकदास
12. (a) रामचंद्र शुक्ल — कथन 96: आचार्य रामचंद्र शुक्ल (जायसी का शृंगार, जायसी ग्रंथावली (भूमिका))
13. (c) रामविलास शर्मा
14. (b) नाभादास — पंक्ति 166: नाभादास, भक्तमाल
15. (b) भँवरगीत — पंक्ति 174: नंददास, भँवरगीत
16. (a) A-3, B-4, C-1, D-2
17. (b) पद्मावत — पंक्ति 126: मलिक मुहम्मद जायसी, पद्मावत
18. (b) रामचंद्र शुक्ल — कथन 85: आचार्य रामचंद्र शुक्ल (भक्ति की परिभाषा, श्रद्धा-भक्ति (चिंतामणि))
19. (b) ग्रियर्सन — कथन 106: जॉर्ज ग्रियर्सन (तुलसीदास)
20. (b) सूरदास — पंक्ति 170: सूरदास, भ्रमरगीत (सूरसागर)
21. (b) कवितावली — पंक्ति 149: तुलसीदास, कवितावली (उत्तरकांड)
22. (c) नरोत्तमदास — पंक्ति 194: नरोत्तमदास, सुदामा चरित
23. (c) गुरु नानक — पंक्ति 118: गुरु नानक, आसा दी वार (गुरु ग्रंथ साहिब)
24. (b) शुक्ल
25. (a) A-4, B-1, C-3, D-2
26. (b) अयोध्याकांड — पंक्ति 144: तुलसीदास, रामचरितमानस (अयोध्याकांड)

हिंदी साहित्य चैनल

खंड 5 : आधुनिक काल (वि.सं. 1900 से आगे) — प्रसिद्ध पंक्तियाँ और महत्वपूर्ण कथन

आधुनिक काल के चरण *(डॉ. नगेंद्र):* भारतेंदु युग *(1857–1900),* द्विवेदी युग *(1900–1918),* छायावाद *(1918–1938),* प्रगतिवाद *(1936* के बाद*),* प्रयोगवाद और नई कविता *(1943* के बाद*),* समकालीन कविता। आधुनिक कवियों की पंक्तियाँ परीक्षा-उपयोगी छोटे अंशों में ही दी गई हैं।

भाग क : प्रसिद्ध पंक्तियाँ

क-1 भारतेंदु युग

248. निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥

कवि: भारतेंदु हरिश्चंद्र | **रचना:** भारतेंदु ग्रंथावली (भाषा-संबंधी दोहे) • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: मातृभाषा-प्रेम; हिंदी-आंदोलन का मूल मंत्र।

249. रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई।
हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥

कवि: भारतेंदु हरिश्चंद्र | **रचना:** भारत दुर्दशा (नाटक) • **परीक्षा-उपयोगी**

250. अँगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेस चलि जात इहै अति ख्वारी॥

कवि: भारतेंदु हरिश्चंद्र | **रचना:** भारत दुर्दशा • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: 'धन का विदेश जाना' — आर्थिक शोषण की पहली काव्य-अभिव्यक्ति।

251. भीतर भीतर सब रस चूसै, हँसि हँसि कै तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि साजन? नहिं अँगरेज॥

कवि: भारतेंदु हरिश्चंद्र | **रचना:** नए ज़माने की मुकरी • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: मुकरी शैली में अंग्रेज़ी शासन पर व्यंग्य।

252. चाहहु जो साँचो निज कल्यान। तो सब मिलि भारत संतान।
जपो निरंतर एक जबान, हिंदी हिंदू हिंदुस्तान॥

कवि: प्रतापनारायण मिश्र • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: 'हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान' का नारा।

253. अंधेर नगरी चौपट्ट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

कवि: भारतेंदु हरिश्चंद्र | **रचना:** अंधेर नगरी (प्रहसन, 1881) • **परीक्षा-उपयोगी**
संकेत: अव्यवस्थित शासन पर व्यंग्य।

254. भारत हमारा कैसा सुंदर सुहा रहा है।

कवि: श्रीधर पाठक | **रचना:** भारत-गीत
संकेत: श्रीधर पाठक — 'स्वच्छंदतावाद के प्रवर्तक'; 'एकांतवासी योगी' (गोल्डस्मिथ के 'हरमिट' का अनुवाद)।

146. "मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** साहित्य | **ग्रंथ:** अशोक के फूल (निबंध) • **परीक्षा-उपयोगी**

147. "हमें अपनी दृष्टि से दूसरे देशों के साहित्य को देखना होगा, दूसरे देशों की दृष्टि से अपने साहित्य को नहीं।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** आलोचना-दृष्टि • **परीक्षा-उपयोगी**

148. "करुणा सेंत का सौदा नहीं है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** करुणा (मनोविकार) | **ग्रंथ:** करुणा (चिंतामणि)

149. "हमें सुंदरता की कसौटी बदलनी होगी।"
कथनकर्ता: प्रेमचंद | **संदर्भ:** साहित्य का उद्देश्य | **ग्रंथ:** प्रगतिशील लेखक संघ, अध्यक्षीय भाषण (1936) • **परीक्षा-उपयोगी**

150. "प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज़ थे।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** प्रेमचंद • **परीक्षा-उपयोगी**

151. "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।"
कथनकर्ता: हजारीप्रसाद द्विवेदी | **संदर्भ:** साहित्य-दृष्टि • **परीक्षा-उपयोगी**

152. "कविता भाषा में आदमी होने की तमीज़ है।"
कथनकर्ता: धूमिल | **संदर्भ:** कविता • **परीक्षा-उपयोगी**

153. "(कविता) ज्ञानात्मक संवेदन और संवेदनात्मक ज्ञान है।"
कथनकर्ता: गजानन माधव मुक्तिबोध | **संदर्भ:** काव्य-प्रक्रिया | **ग्रंथ:** एक साहित्यिक की डायरी • **परीक्षा-उपयोगी**

ख-2 भारतेंदु हरिश्चंद्र

154. "अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो वे पद्माकर और द्विजदेव की परंपरा में दिखाई पड़ते थे, दूसरी ओर बंगदेश के माइकेल और हेमचंद्र की श्रेणी में।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** भारतेंदु | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

155. "हिंदी नई चाल में ढली (1873 ई.)।"
कथनकर्ता: भारतेंदु हरिश्चंद्र | **संदर्भ:** हिंदी गद्य ('हरिश्चंद्र मैगज़ीन' के संदर्भ में) | **ग्रंथ:** कालचक्र • **परीक्षा-उपयोगी**

156. "यदि द्विवेदी जी न उठ खड़े होते तो जैसी अव्यवस्थित, व्याकरण-विरुद्ध और ऊटपटाँग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परंपरा जल्दी न रुकती।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** महावीर प्रसाद द्विवेदी | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

157. "सच्चे स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिज़्म) का प्रवर्तक श्रीधर पाठक को ही समझना चाहिए।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** श्रीधर पाठक | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

158. "गुप्त जी वास्तव में सामंजस्यवादी कवि हैं।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** मैथिलीशरण गुप्त | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

ख-3 छायावाद

159. "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहाँ उसका संबंध काव्य-वस्तु से होता है... दूसरा प्रयोग काव्य-शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।"
कथनकर्ता: आचार्य रामचंद्र शुक्ल | **संदर्भ:** छायावाद | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य का इतिहास • **परीक्षा-उपयोगी**

160. "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।"
कथनकर्ता: डॉ. नगेंद्र | **संदर्भ:** छायावाद | **ग्रंथ:** आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ • **परीक्षा-उपयोगी**

161. "मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौंदर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।"
कथनकर्ता: नंददुलारे वाजपेयी | **संदर्भ:** छायावाद | **ग्रंथ:** हिंदी साहित्य: बीसवीं शताब्दी • **परीक्षा-उपयोगी**

परिशिष्ट 1 : पंक्ति-सूची (त्वरित दोहराव)

पुस्तक की सभी पंक्तियों का पहला चरण, कवि और रचना — कवि का नाम ढककर स्वयं को परखें।

आदिकाल

क्र.	पंक्ति (पहला चरण)	कवि	रचना
1	पंडिअ सअल सत्त वक्खाणइ। देहहि बुद्ध बसंत न जाणइ।	सरहपा	दोहाकोश
2	जहि मन पवन न संचरइ, रवि ससि नाहि पवेस।	सरहपा	दोहाकोश
3	घोर अँधारे चंदमणि जिमि उज्जोअ करेइ।	सरहपा	दोहाकोश
4	नाद न बिंदु न रवि न शशि मंडल। चिअराअ सहावे मूकल।	सरहपा	चर्यापद
5	काआ तरुवर पंच बिडाल। चंचल चीए पइठो काल।	लूइपा (लूहिपा)	चर्यापद
6	भाव न होइ, अभाव ण जाइ। अइस संबोहे को पतिआइ?	लूइपा	चर्यापद
7	सहजे थिर करि वारुणी साध। जे अजरामर होइ दिट काँध॥	विरूपा	चर्यापद
8	एक ण किज्जइ मंत्र ण तंत। णिअ घरणी लइ केलि करंत॥	कण्हपा	चर्यापद
9	नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छइ। छोइ जाइ सो बाह्म नाड़िया॥	कण्हपा	चर्यापद
10	गंगा जउँना माझे रे बहइ नाई।	कण्हपा	चर्यापद
11	ससुरी निंद गेल, बहुड़ी जागअ। कानेट चोर निलका गइ मागअ॥	कुक्कुरिपा	चर्यापद
12	बेंग संसार बाड़हिल जाअ। दुहिल दूध कि बेंटे समाअ॥	ढेंढणपा	चर्यापद
13	आगम वेअ पुराणे पंडित माण वहंति।	कण्हपा	दोहाकोश
14	हसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान। अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान॥	गोरखनाथ	सबदी (गोरखबानी)
15	स्वामी तुम्हइ गुर गोसाई। अम्हे जो सिव सबद एक बूझिबा॥	गोरखनाथ	गोरखबानी (पद)
16	अवधू रहिया हाटे बाटे रूप बिरष की छाया।	गोरखनाथ	गोरखबानी
17	नौ लख पातरि आगे नाचै, पीछे सहज अखाड़ा।	गोरखनाथ	गोरखबानी
18	गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।	तुलसीदास	कवितावली
19	जो जिण सासण भाषियउ सो मई कहियउ सारु।	देवसेन	श्रावकाचार (सं. 990)
20	विणु धवलेण सयडु किं हल्लइ। विणु जीवेण देहु किं चल्लइ॥	पुष्पदंत	जसहरचरिउ
21	भल्ला हुआ जु मारिया बहिणि महारा कंतु।	हेमचंद्र (उद्धृत दोहा)	सिद्धहेमशब्दानुशासन
22	जइ सो न आवइ, दूइ! घरु, काइँ अहोमुहु तुज्झु।	हेमचंद्र (उद्धृत दोहा)	सिद्धहेमशब्दानुशासन
23	जे महु दिण्णा दिअहडा दइएँ पवसंतेण।	हेमचंद्र (उद्धृत दोहा)	सिद्धहेमशब्दानुशासन
24	पिय संगमि कउ निद्दडी? पियहो परक्खहो केंव।	हेमचंद्र (उद्धृत दोहा)	सिद्धहेमशब्दानुशासन
25	रावण जायउ जहि दिअहि दह मुह एक सरीरु।	सोमप्रभ सूरि	कुमारपालप्रतिबोध (सं. 1241)
26	बेस विसिट्ठह वारियइ जइवि मणोहर गत्त।	सोमप्रभ सूरि	कुमारपालप्रतिबोध
27	पिय हउँ थक्किय सयलु दिणु तुह विरहग्गि किलंत।	सोमप्रभ सूरि	कुमारपालप्रतिबोध

परिशिष्ट 2 : आलोचक-वार सूची (दोहराने के लिए)

पुस्तक के सभी कथन कथनकर्ता के अनुसार — क्रमांक वही है जो ऊपर कथन के साथ दिया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

क्र.	कथन (संक्षेप)	संदर्भ (काल)
1	जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्...	साहित्य का स्वरूप और इतिहास-दृष्टि (पूर्वपीठिका)
2	आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य-परंपरा के साथ उनका सामंजस्य ...	साहित्य के इतिहास की परिभाषा (पूर्वपीठिका)
11	राजाश्रित कवि और चारण... अपने आश्रयदाता राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरितों या गाथाओं का वर्णन भी किया ...	'वीरगाथा काल' नाम का आधार (आदिकाल)
12	सारांश यह कि जिस समय से हमारे हिंदी-साहित्य का अभ्युदय होता है, वह लड़ाई भिड़ाई का समय था, वीरत...	आदिकाल की परिस्थिति (आदिकाल)
13	उस समय तो केवल वीरगाथाओं की उन्नति संभव थी।	आदिकाल (आदिकाल)
14	ये वीरगाथाएँ दो रूपों में मिलती हैं—प्रबंधकाव्य के साहित्यिक रूप में और वीरगीतों (Ballads) के र...	वीरगाथा के रूप (प्रबंध: पृथ्वीराज रासो; वीरगीत: बीसलदेव रासो) (आदिकाल)
15	इन काव्यों में शृंगार का भी थोड़ा मिश्रण रहता था, पर गौण रूप में, प्रधान रस वीर ही रहता था।	रासो काव्य का रस (आदिकाल)
16	जैसे पुराना चावल ही बड़े आदमियों के खाने योग्य समझा जाता है वैसे ही अपने समय से कुछ पुरानी पड़ी...	आदिकाल की काव्यभाषा (आदिकाल)
17	मोटे हिसाब से वीरगाथा-काल महाराज हम्मीर के समय तक ही समझना चाहिए।	आदिकाल की सीमा (आदिकाल)
20	प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिंदी-साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है।	हिंदी साहित्य का आरंभ (आदिकाल)
21	पहले जैसे गाथा या गाहा कहने से प्राकृत का बोध होता था वैसे ही पीछे दोहा या दूहा कहने से अपभ्रंश...	दोहा छंद और अपभ्रंश (आदिकाल)
22	सिद्धों में 'सरह' सबसे पुराने अर्थात् वि. सं. 690 के हैं। अतः हिंदी काव्य-भाषा के पुराने रूप का...	हिंदी काव्यभाषा का आरंभ (आदिकाल)
23	चरित्र-काव्य या आख्यान-काव्य के लिये अधिकतर चौपाई दोहे की पद्धति ग्रहण की गई है।	जैन चरित-काव्य (आदिकाल)
24	अपभ्रंश की रचनाओं की परंपरा यहीं समाप्त होती है।	शार्ङ्गधर/हम्मीर रासो के बाद (आदिकाल)
25	ज्यों ज्यों काव्यभाषा देशभाषा की ओर अधिक प्रवृत्त होती गई त्यों त्यों तत्सम संस्कृत शब्द रखने म...	शार्ङ्गधर और कीर्तिलता की भाषा (आदिकाल)
26	प्रादेशिक बोलियों के साथ साथ ब्रज या मध्यदेश की भाषा का आश्रय लेकर एक सामान्य साहित्यिक भाषा भी...	डिंगल और पिंगल (आदिकाल)
27	अपभ्रंश या प्राकृताभास हिंदी के पद्यों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों की सांप...	हिंदी पद्य का आरंभ (आदिकाल)
28	अपभ्रंश के जो नमूने हमें पद्यों में मिलते हैं वे उस काव्यभाषा के हैं जो पुरानेपन के कारण बोलने ...	अपभ्रंश काव्यभाषा (आदिकाल)

परिशिष्ट 3 : मॉडल टेस्ट — 120 प्रश्न (पंक्ति और कथन पहचानिए)

इस पत्र के प्रश्न पुस्तक की उन पंक्तियों और कथनों से बने हैं जिन पर ऊपर अभ्यास-प्रश्न नहीं दिए गए। हर उत्तर के साथ मूल प्रविष्टि का क्रमांक है।

1. "पंडिअ सअल सत्त वक्खाणइ। देहहि बुद्ध बसंत न जाणइ।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) सरहपा (b) गोरखनाथ (c) अमीर खुसरो (d) दलपत विजय

2. "जहि मन पवन न संचरइ, रवि ससि नाहि पवेस।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) चंदबरदाई (b) सरहपा (c) कुक्कुरिपा (d) दलपत विजय

3. "गंगा जउँना माझे रे बहइ नाई।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) नरपति नाल्ह (b) सरहपा (c) कण्हपा (d) श्रीधर

4. "आगम वेअ पुराणे पंडित माण वहंति।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) जल्हण (b) अब्दुल रहमान (c) कण्हपा (d) कल्लोल

5. "हसिबा खेलिबा धरिबा ध्यान। अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान॥" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) कुक्कुरिपा (b) शार्ङ्गधर (c) देवसेन (d) गोरखनाथ

6. "जो जिण सासण भाषियउ सो मई कहियउ सारु।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) विद्याधर (b) देवसेन (c) विद्यापति (d) पुष्पदंत

7. "संदेसडउ सवित्थरउ पइ मइ कहणु न जाइ।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) जल्हण (b) लूइपा (c) अब्दुल रहमान (d) श्रीधर

8. "बारह सै बहोत्तराँ मझारि। जेठ बदी नवमी बुधवारि॥" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) अब्दुल रहमान (b) चंदबरदाई (c) नरपति नाल्ह (d) मुनि रामसिंह

9. "गरबि न बोलो हो साँभरया-राव। तो सरीखा घणा और भुवाल॥" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) कल्लोल (b) गोरखनाथ (c) नरपति नाल्ह (d) विद्याधर

10. "अस्त्रीय जनम काईं दीधउ महेस। अवर जनम थारइ घणा रे नरेस॥" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) श्रीधर (b) अब्दुल रहमान (c) लूइपा (d) नरपति नाल्ह

11. "एकादस सै पंचदह विक्रम साक अनंद।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) गोरखनाथ (b) विद्यापति (c) कुक्कुरिपा (d) चंदबरदाई

12. "मन अति भयो हुलास, बिगसि जनु कोक किरन रवि।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) अमीर खुसरो (b) चंदबरदाई (c) देवसेन (d) पुष्पदंत

13. "खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) देवसेन (b) अमीर खुसरो (c) मुनि रामसिंह (d) लूइपा

14. "गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) ढेंढणपा (b) जल्हण (c) अमीर खुसरो (d) मुनि रामसिंह

15. "एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर औंधा धरा॥" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) सोमप्रभ सूरि (b) विद्यापति (c) कल्लोल (d) अमीर खुसरो

16. "जे हाल मिसकीं मकुन तग़ाफ़ुल दुराय नैना, बनाय बतियाँ।" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) अमीर खुसरो (b) मुनि रामसिंह (c) कुक्कुरिपा (d) सोमप्रभ सूरि

17. "बालचंद बिज्जावइ भासा। दुहु नहिं लग्गइ दुज्जन-हासा॥" — यह पंक्ति किसकी है?
(a) विद्यापति (b) सरहपा (c) श्रीधर (d) सोमप्रभ सूरि

हिंदी साहित्य चैनल स्टोर

आपकी तैयारी के लिए अन्य उपयोगी PDF नोट्स — नाम के आगे दिए बटन पर क्लिक करें

UGC NET/JRF हिंदी (पेपर 2)

UGC NET/JRF हिंदी पेपर 2 — कंप्लीट कॉम्बो नोट्स	सभी 10 इकाइयाँ एक साथ	**यहाँ क्लिक करें »**
UGC NET/JRF हिंदी टेस्ट सीरीज़	33 टेस्ट पेपर, 1500+ प्रश्न	**यहाँ क्लिक करें »**
हिंदी साहित्य का इतिहास (इकाई-2)	इकाई-वार नोट्स	**यहाँ क्लिक करें »**
हिंदी साहित्य की गद्य विधाएँ — नोट्स	कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि	**यहाँ क्लिक करें »**

हिंदी साहित्य का इतिहास — प्रश्नोत्तरी (MCQ)

आदिकाल प्रश्नोत्तरी	700+ MCQ	**यहाँ क्लिक करें »**
भक्तिकाल प्रश्नोत्तरी	1000+ MCQ	**यहाँ क्लिक करें »**
रीतिकाल प्रश्नोत्तरी	750+ MCQ	**यहाँ क्लिक करें »**
आधुनिक काल (काव्य + गद्य) प्रश्नोत्तरी	2500+ MCQ	**यहाँ क्लिक करें »**

हिंदी साहित्य का इतिहास — कालवार नोट्स

आदिकाल नोट्स	हिंदी साहित्य	**यहाँ क्लिक करें »**
भक्तिकाल नोट्स	हिंदी साहित्य	**यहाँ क्लिक करें »**
रीतिकाल नोट्स	हिंदी साहित्य	**यहाँ क्लिक करें »**
आधुनिक काल नोट्स	हिंदी साहित्य	**यहाँ क्लिक करें »**

UP TGT/PGT, व्याकरण और पेपर 1

UP TGT Hindi Book PDF	संपूर्ण कोर्स, 428 पृष्ठ + मॉक टेस्ट	**यहाँ क्लिक करें »**
UP TGT Hindi Mock Test	10 सेट, 1000 प्रश्न (व्याख्या सहित)	**यहाँ क्लिक करें »**
हिंदी व्याकरण संपूर्ण नोट्स	255 पृष्ठ	**यहाँ क्लिक करें »**
UGC NET Paper 1 Combo Notes (हिंदी माध्यम)	सभी 10 इकाइयाँ	**यहाँ क्लिक करें »**

सभी प्रोडक्ट और डेमो देखें: store.hindisahity.com

आपकी परीक्षा के अनुसार कस्टम नोट्स — ऑर्डर पर तैयार

हमारी टीम RPSC, TGT, PGT, UPSC, NET/JRF सहित किसी भी परीक्षा के लिए आपके पाठ्यक्रम के अनुसार विशेष नोट्स ऑर्डर पर तैयार करती है (सशुल्क सेवा)।

WhatsApp : 9680260474

hindisahity.com · store.hindisahity.com · YouTube : Hindi Sahitya Channel · Telegram

© सर्वाधिकार सुरक्षित · लेखक : केवल कृष्ण घोड़ेला · हिंदी साहित्य चैनल, श्रीगंगानगर (राजस्थान)